ॐ

सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के

संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरूष - कर्मयोगी

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का

संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख

(भाग-2)

संकलन/संपादन : संत मोनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

rawpixel

ॐ

सत्नाम साक्षी

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के

संस्थापक - प्रवर्तक - युगपुरुष - कर्मयोगी

आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का

संक्षिप्त जीवन परिचय एवं लेख

(भाग-2)

संकलन/संपादन : संत मोनूराम प्रेमप्रकाशी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर ● श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

पुण्यमयी तपोस्थली श्री अमरापुर दरबार

भारत का पेरिस गुलाबी नगर जयपुर, एक और जहां प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, अद्‍भुत स्थापत्य कला एवं नियोजित नगर योजना के लिए विश्वविख्यात है वही दूसरी ओर, अनोखे आध्यात्मिक वातावरण, अद्वितीय धार्मिक सहिष्णुता, विलक्षण सामाजिक सामजस्य के लिए भी जगत प्रख्यात है! शायद यही कारण है कि गुलाबी नगर के डगर डगर पर प्रत्येक गली और कूचे में, प्रत्येक पथ पर कोई न कोई पूजा स्थल, कोई न कोई आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र बना हुआ है! ऐसा ही एक प्रसिद्ध मन्दिर आध्यात्मिक आस्था का केन्द्र एवं सभ्यता एवं संस्कृति की धरोहर को सुरक्षित रखने वाला पूजा स्थल है ''**श्री अमरापुर स्थान**''!

यह आश्रम एम.आई.रोड पर रेल्वे स्टेशन एवं मुख्य बस अड्‍डे के काफी निकट स्थित है! इस विशाल आश्रम का भव्य प्रवेशद्वार, अपना अनोखी, प्राचीन स्थापत्य कला एवं सुन्दर सजावट के कारण, राह चलने वालों का बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है! मुख्य प्रवेश द्वार पर ''**श्री अमरापुर स्थान**'' बड़े बड़े सुन्दर एवं आकर्षक ढंग से लिखा हुआ है! यह विशाल आश्रम (अखिल भारतीय प्रेम प्रकाश मण्डल, जिसे **मण्डलाचार्य 1008 सद्‍गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** ने स्थापित किया था) का मुख्य केन्द्र है। कहना न होगा कि प्रेम प्रकाश मण्डल की १०० से अधिक शाखाऐं पूरे भारत व विश्व के कई देशों में बनी हुई है!

''**श्री अमरापुर स्थान, जयपुर**'' के निर्माण की एक अलग ही पृष्ठभूमि, एक अलग ही इतिहास, एक अलग ही गौरव गाथा है। भारत विभाजन के भी पहले, आचार्य श्री टेऊँराम जी महाराज, अपने परम शिष्य सद्‍गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के साथ भारत के विभिन्न तीर्थों की यात्रा कर मथुरा से जयपुर होते हुए वापस ''**टण्डोआदम**'' सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) जाना चाहते थे! एक या दो दिन के लिए इस गुलाबी नगरी में विश्राम किया और यहां के मुख्य मन्दिरों एवं दर्शनीय स्थलों को देखा और बड़े ही आनन्द मग्न हुए!

''आचार्य श्री'' सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी के साथ भ्रमण करते हुए, आचार्य श्री ठीक इसी स्थान पर पहुंचे (जहां वर्तमान में विशाल श्री अमरापुर मन्दिर बना हुआ है) आध्यात्मिक सौरभ की गंध पाकर, बड़े ही प्रफुल्लित हुए और अपने परम शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज से बोले "क्यों भई सर्वानन्द! यह स्थल प्रेम प्रकाश आश्रम के निर्माण के लिए कैसा रहेगा ?" परम गुरुभक्त स्वामी सर्वानन्द १०६ जी महाराज ने भी उतने ही उत्साह, स्फूर्ति एवं आनन्द के साथ उत्तर दिया था **''गुरुदेव, अत्यन्त उत्तम रहेगा !''** और त्रिकालदर्शी आचार्य-प्रवर की भविष्यवाणी सत्य साबित हुई! स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने स्वप्न साकार किया, जिसके फलस्वरूप आज यहां **''श्री अमरापुर स्थान''** स्थित है!

आचार्य प्रवर स्वामी टेऊँराम जी महाराज ईश-अवतार थे! श्रीमद् भागवत गीता में कहा गया है "जब जब धर्म की हानि और अधर्म की अभिवृद्धि होती है, तब तब मैं सन्त महापुरुषों की रक्षा के लिए और दुष्टों के विनाश के लिए स्वयं अवतार धारण करता हूं" ! उस समय सिन्धु प्रदेश पर, एक अन्य सभ्यता एवं संस्कृति छा रही थी, लोग अपना सनातन मार्ग छोड़कर, प्राचीन रीति रिवाज को त्याग कर, आध्यात्मिक मार्ग से भटक रहे थे, ऐसे ही समय में अवतार धारण किया था आचार्य श्री टेऊँराम जी महाराज ने किस प्रकार उन्होंने, पूरे सिन्धु प्रदेश, में सनातन धर्म का प्रचार किया? किस प्रकार भारत के विभिन्न भागों में **''वेदांत''** की अखण्ड ज्योति जगाई? किस प्रकार उन्होंने जन-जन के हृदय में प्रेम का प्रकाश फैलाया, उसका सारा इतिहास, उनकी जीवन कथा में लिखा हुआ है!

प्रेम प्रकाश पंथ का जो पौधा आचार्य जी ने लगाया था ! वह आज एक विशाल वट्वृक्ष की भांति भारत के कोने-कोने में फैला हुआ है! उन्होंने अपने अनुनायी भक्तों को मंत्र दिया था **''ॐ सत्नाम साक्षी''** इसी मंत्र से सब सत्संगी, सब प्रेम प्रकाशी भाई-बहिन, एक दूसरे को सम्बोधन करते है, प्रणाम करते है, अभिवादन करते है और एक दूसरे का स्वागत सत्कार करते है! प्रेम प्रकाश पंथ के आराध्य इष्ट है **''भगवान श्री लक्ष्मी नारायण''** जिसकी कि एक अत्यन्त मनभावनी आकर्षक प्रतिमा सत्संग भवन में प्रतिष्ठित है!

आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज एक महान तत्वेता संत थे! उनकी

अमरवाणी **प्रेम प्रकाश ग्रन्थ** में संकलित है! उन्होंने यम-नचिकेता संवाद, चूड़ाला-शिखरध्वज संवाद, अमरकथा, वामन बलि संवाद, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, इत्यादि अनेक ग्रन्थों की रचना की है!

उन्होंने ही सर्वप्रथम अप्रेल माह के **आध्यात्मिक चैत्र मेले** का शुभारम्भ किया था! जो कि प्रत्येक वर्ष बड़ी धूमधाम के साथ इसी **श्री अमरापुर स्थान** में मनाया जाता है! इस कुम्भ सदृश महान मेले में न केवल प्रेम प्रकाश पंथ के साधु सन्त, विद्वान, पण्डित पधारते है, अपितु देश विदेश से गायक, भजनीक और अन्य सन्तों महात्माओं का भी सुन्दर समागम होता है! पंच दिवस तक भक्ति ज्ञान, कर्म की ऐसी परम पावन, त्रिवेणी प्रवाहित होती है जिसमें डुबकी लगाकर प्रेमी, सत्संगी, गुरुमुखी, जिज्ञासु अपना जीवन सफल बनाते है!

आइए, मुख्य प्रवेशद्वार से **श्री अमरापुर स्थान** के भीतर चलें। अन्दर प्रवेश होते ही एक तरफ गौशाला है और दूसरी तरफ उद्यान है, जो विभिन्न प्रकार के फूलों और वृक्षों से सुसज्जित है! गौशाला में अनेकों गायों की सेवा की जाती है! मुख्य प्रवेश द्वार के बाद, आता है **''गुरुमुख द्वार''** जो कि प्रेम प्रकाष मण्डल की एक अन्य महान विभूति अवधूत स्वामी गुरुमुखदास जी की स्मृति में बना हुआ है!

गुरुमुख द्वार के बाद, एक विशाल सत्संग हॉल है, जिसमें ५००० श्रोतागण सुविधापूर्वक सत्संग का लाभ लेते है! यहां पर प्रातः और सायं अनिवार्य रूप से सत्संग, पूजा आरती इत्यादि होती है! विशेष त्यौहारों, पर्वों, उत्सवों के अवसर पर अखण्ड भण्डारे का भी आयोजन किया जाता है!

सत्संग हॉल में, एक तरफ द्वार के पास प्रेम प्रकाश मण्डल की **''धर्म ध्वजा''** स्थित है, तो दूसरी और एक यज्ञशाला बनी हुई है! जिसमें विधि विधान से, ज्ञाता पण्डितों द्वारा यज्ञ-हवन का आयोजन किया जाता है!

व्यास पटल के ठीक थोड़ा ऊपर **भगवान श्री लक्ष्मी नारायण जी** की अत्यन्त सुन्दर प्रतिमा स्थित है, जिसका वर्णन ऊपर कर चुके है, उसके पश्चात् केन्द्र में आचार्य जी एवं स्वामी जी का गुबंजनुमा एक विशाल मन्दिर है! एक स्थान पर आचार्य जी द्वारा काम में

लाये गये उनके वस्त्र, कमण्डल, चरण पादुका एवं जन्मभूमि की पवित्र रज इत्यादि रखे गये है, ठीक बीचों बीच आचार्य श्री की भव्य प्रतिमा है, जो दूर से ही दर्शकों को आकर्षित करती है, उसके साथ-साथ है, स्वामी जी की उतनी ही सजीव एवं सुन्दर मूर्ति! उस केन्द्रीय कक्ष में परिक्रमा पथ बना हुआ है, उस परिक्रमा पथ पर आचार्य श्री द्वारा कहे गये दोहे दीवारों पर अंकित है! मन्दिर के इसी गुम्बजनुमा केन्द्रीय कक्ष में भगवान की रासलीला, रामदरबार, शिव परिवार, भगवान श्री कृष्ण का कुरुक्षेत्र में अर्जुन को उपदेश, भगवान विष्णु का क्षीर सागर में विराजमान होना इत्यादि अनेक कलाकृतियाँ एवं भित्ति चित्र बने हुए हैं, जो कांच एवं विभिन्न रंगों के सम्मिश्रण द्वारा बनाये गये है!

ठीक उसी केन्द्रीय कक्ष के नीचे, गर्भगृह में आचार्य श्री एवं स्वामी जी की समाधियाँ बनी हुई है! यहाँ भी परिक्रमा पथ बना हुआ है, और दीवारी पर आचार्य श्री के आध्यात्मिक अर्थ से परिपूर्ण दोहे अंकित हैं! श्रद्धालु साष्टांग दण्डवत प्रणाम करते हैं, परिक्रमा करते हैं, और सामने गैलरी जैसे स्थान पर बैठकर, आसन लगाकर, प्रार्थना करते हैं! दर्शन कर प्रसन्न होने के पश्चात् प्रत्येक श्रद्धालु को महाप्रसाद रुप में **''ढोढा चटनी''** दिया जाता है! ज्वार की रोटी का एक टुकड़ा, उस पर धनिया-पोदीने, हरी मिर्च, मसाले मिलाकर बनाई हुई चटनी में षटरस से भी बढ़कर स्वाद और आनन्द है, क्योंकि यह प्रेम से सिचित है, स्नेह से सिक्त है और है भावना से परिपूर्ण है, इसलिये ही इसमें ऐसा अद्वितीय स्वाद है!

श्री अमरापुर स्थान के ही संरक्षण में, प्रेम प्रकाश विश्राम गृह है, जहाँ पर यात्रियों के ठहरने को समुचित व्यवस्था है! आश्रम के अन्दर सन्त महात्माओं एवं प्रमुख प्रेमियों के रहने की भी उचित व्यवस्था है!

आचार्य श्री टेऊँराम जी महाराज सन् १९४२ में ब्रह्मलीन हुए, उनके पश्चात् पीठासीन हुए **स्वामी सर्वानन्द जी महाराज !** नाम के अनुरुप ही, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, अपनी ओजस्वी एवं मधुर वाणी से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर देते थे और आध्यात्मिक आनन्द की उन ऊँचाईयों की ओर ले जाते थे, ऐसे देव-दुर्लभ आनन्द की अनूभूति कराते थे, जिसका वर्णन शब्दों में नही किया जा सकता है!

आज भी प्रत्येक रविवार को, जब उनके प्रवचनों की कैसेट चलायी जाती है, तब खचाखच भरे हुए सत्संग भवन में श्रोता, क्या बच्चे क्या बूढ़े, क्या युवा, क्या प्रोढ़, क्या स्त्री, क्या पुरुष, सब एक अनोखी मस्ती में झूमने लगते है, स्वर से स्वर मिलाकर गाने लगते है, ताल देकर एवं ताली बजाकर, उस आनन्द की अनुभूति करते है! स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने अपने गुरुदेव के ज्ञान, भक्ति, प्रेम, कर्म, सेवा और सत्संग के संदेश को घर-घर में पहुंचाया! स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने ऋषिकेश की तपोभूमि में करीब बारह एवं तपस्या की, और हरिद्वार में, सप्त सरोवर मार्ग पर, सुरसरी के परम पावन तट पर अत्यन्त विशाल **प्रेम प्रकाश आश्रम** की स्थापना की! हरिद्वार जी में बना हुआ यह आश्रम भी बड़ा ही मनोहर दर्शनीय स्थल है!

स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के देहावसान के पश्चात् पीठाधीश्वर बने स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज, जो एक उच्च्च कोटि के अत्यन्त पहुंचे हुए महात्मा थे! इस भयानक कलिकाल में, जहां चारों ओर अशान्ति का साम्राज्य छाता जा रहा है, स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज ने, अपनी मधुर वाणी से एक दिव्य शान्ति प्रदान की! उन्होंने अपनी सम्पूर्ण वाणी एवं रचनाओं को अपने गुरुदेव के नाम समर्पित किया!

स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज के देहावसान के पश्चात् स्वामी हरिदास राम जी महाराज भी बड़े ही शास्त्र मर्मश, विद्वान तत्ववेता सन्त थे, जो विनम्रता की, गुरु भक्ति की, वैराग्य की ज्वलंत प्रतिमूर्ति थे! उनके द्वारा इस अमरापुर स्थान बड़े सुव्यवस्थित ढंग से चलाया गया! इस दर्शनीय स्थल को देखने के लिये व जाने कितनी दूर-दूर से भक्त दर्शन हेतु आते हैं एवं अपने जीवन को सार्थक बनाते हैं!

वर्तमान में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के पंचक पीठाधीश्वर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज गुरु महाराज विराजमान है !

श्री गुरु महाराज के नेतृत्व में सदैव की तरह, श्री अमरापुर स्थान में चैत्र मेले का शुभारम्भ शोभा यात्रा से किया जाता है! इस शोभा यात्रा में, श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्तों महात्माओं के अलावा, विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक झांकियों से भी शोभायात्रा को सजाया

जाता है! इन सांस्कृतिक झांकियों से महान सिन्धु सभ्यता एवं संस्कृति की एक झलक देखने को मिलती है! यह शोभायात्रा श्री अमरापुर स्थान से आरम्भ होकर, नगर के मुख्य मार्गों से होती हुई, वापस श्री अमरापुर स्थान पर समाप्त होती है! नगर में शोभायात्रा का स्वागत करने के लिये जगह-जगह ''**स्वागत द्वार**'' बनाये जाते हैं, जगह जगह शीतल पेय शर्बत आदि एवं प्रसाद का वितरण किया जाता है। जगह जगह शोभा यात्रा पर पुष्प वर्षा की जाती है और उसका हार्दिक स्वागत सत्कार और अभिनन्दन किया जाता है!

हे गुरुदेव ! आपके पवित्र स्थान, आप के अनन्त नामों, अनन्त रुपों, अनन्त आयुषों, अनन्त अलंकारो, अनन्त भक्तों और अनन्त द्वारपालों को हमारा शत्-शत् प्रणाम, जहां जहां जिस जिस दिशा में विराज रहे हो, उस स्थान को दिशा को भी हमारा प्रणाम !

सत्नाम साक्षी ! सत्नाम साक्षी !! सत्नाम साक्षी !!!

पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान

कलयुग के अंधकार में धर्म ही, प्रकाश का एक मात्र साधन है। धर्म के लिए जरुरी है ज्ञान, आस्था और प्रेम। धर्म की स्थापना के लिए गुरूओं ने अपना जीवन समर्पित कर दिया। धर्म की राह में अनेक मत मतान्तर बने, पर सबका लक्ष्य एक ही है, परमानन्द की प्राप्ति, संसार के कष्टों से मुक्ति!

मुक्ति के इस मार्ग को प्राप्त करने के लिए **आचार्य सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज** ने प्रेम का रास्ता अपनाया! उन्होंने बीसवीं सदी की शुरूआत में **'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल'** की स्थापना की!

भारत की छोटी काशी के कहे जाने वाले जयपुर शहर में मुख्य मार्ग एम.आई. रोड पर बने **''श्री अमरापुर स्थान''** की स्थापना सन् 1951 में सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज ने की थी! बाद में स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज और स्वामी हरिदासराम जी महाराज ने इसे न केवल संभाला, बल्कि अपनी सेवा से श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की कीर्ति को चहुं और फैलाया भी!

श्री अमरापुर यानि की वह स्थान, जहां आकर मानव जन्म-मरण के चक्र से छुट जाए और अपने स्वरूप को जानकर अमर हो जाए। यह नाम स्वयं सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज ने दिया था!

श्री अमरापुर स्थान का मुख्य द्वार अपनी स्थापत्य कला से बरबस ही राहगीरों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता हैं! द्वार के ठीक बाई ओर श्री अमरापुर सत्साहित्य भण्डार (बुक स्टाल) बना हुआ है! जिसमें महाराज श्री के सत्साहित्य, कैसेट, फोटू आदि सामान उपलब्ध हैं। ठीक दाई ओर विशाल जूता घर बना हुआ

जहां लगभग 5000 से अधिक भक्तजनों के जूते-चप्पल सुरक्षित रखे जा सकते हैं! अन्दर प्रवेश करते ही सफेद संगमरमर से बना विशाल गुरुमुखद्वार है, जो कि रंग-बिरंगे पुष्पों की बेल से शोभायमान है! यह द्वार स्वामी गुरुमुख दास जी की स्मृति में बनाया गया है। स्वामी गुरुमुखदासजी, स्वामी सर्वानन्द जी के गुरु भाई थे!

गुरुमुखद्वार के पास स्थित है श्री अमरापुरेश्वर महादेव का मन्दिर। मन्दिर में श्वेत संगमरमर के शिवलिंग के अलावा पार्वती, गणेश, कार्तिकेय और गौमाता सहित शिव परिवार भी विराजमान है! शिवमंदिर के बांई ओर अवधूत स्वामी गुरुमुखदास जी महाराज की समाधि है। सत्संग स्थल के ठीक सामने ऊपरी हिस्से में गुरु महाराज की प्रदर्शनी स्थल है, यहां स्वामी सर्वानन्द जी व स्वामी हरिदासराम महाराज जी के वस्त्र, आसन तथा चित्रों को सुन्दर ढंग से सजाया गया है!

गुरुमुखद्वार के पास एक विशाल सत्संग हाल है, जहां 5000 से अधिक भक्तजन एक साथ बैठकर सत्संग का लाभ ले सकते है। यहां रोज सुबह और शाम पूजा, आरती और सत्संग का कार्यक्रम होता है!

सत्संग हाल के एक द्वार के पास ''**श्री प्रेम प्रकाश धर्म ध्वजा**'' स्थित है तो दूसरी और ''**श्री अमरापुर यज्ञशाला**'' है। करीब 60 फुट ऊँचा आसमान छूता ध्वजा स्तम्भ श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र है, तो विशाल यज्ञशाला संतो और ब्राह्मणों के आकर्षण का केन्द्र है! सत्संग हाल में सन्त महात्माओं के बैठने के लिए विशाल मंच है और उसके पीछे बना है प्रेम प्रकाश मण्डल के इष्टदेव भगवान श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर। उनके ठीक नीचे झूले में झूलते लड्डू गोपाल विराजमान है!

श्री लक्ष्मीनारायण मंदिर के आगे भव्य ''**श्री मन्दिर**'' है, मन्दिर में सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज, स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज और स्वामी हरिदासराम जी महाराज की प्रतिमा विराजमान है! प्रतिमाओं में इतनी कशिश है कि मानो साक्षात दर्शन दे रही हो। प्रतिमा के पास में ही गुरु महाराज की खादी की पोशाक, यकतारा व चरण पादुका आदि रखे है!

मन्दिर के ऊपरी भाग में कांच की कारीगरी से बने भित्ति चित्र आकर्षण का केन्द्र है, इनमें श्री राम दरबार, क्षीर सागर में बिराजे भगवान विष्णु, गीता उपदेश तथा भगवान कृष्ण की रासलीला चित्रित है ! मन्दिर के भीतरी परिक्रमा कक्ष में चारों और दीवारों पर गुरू महाराज के दोहे, पद व छन्द लिखे है !

मन्दिर के निकट एक कमरे में ''**ग्रन्थ कक्ष**'' बनाया गया है। इस कक्ष में सद्गुरु टेऊँराम जी की अमरवाणी, स्वामी सर्वानन्द जी द्वारा तैयार ''**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**'' के रूप में संजोकर रखा गया है। साथ ही इस कक्ष में इष्टदेव भगवान ''**भगवान श्री झूलेलाल जी**'' की प्रतिमा भी रखी हुई है !

आगे मन्दिर का गर्भ ग्रह है, जहां सद्गुरु टेऊँराम जी और स्वामी सर्वानन्द जी का समाधि स्थल है। जहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुगण दर्शन करके सुख-शान्ति को प्राप्त करते है !

इसके अलावा श्री अमरापुर स्थान में एक गौशाला भी है। जहां न केवल गौ-सेवा का काम होता है, बल्कि सन्तों की सेवा के लिए शुद्ध दूध प्राप्त किया जाता है !

श्री अमरापुर स्थान में एक विशाल भण्डारा हाल भी बनाया गया है, मुख्य त्यौहारो-उत्सवों पर इस हाल में अनेक संत-महात्मा व श्रद्धालुगण एक साथ भोजन की प्रसादी ग्रहण करते है !

भण्डारे के ठीक पास मण्डल के वर्तमान श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष ''**सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज**'' का निवास स्थल है, जिसके पास ही सन्त महात्माओं के ठहरने के लिए अनेक कुटियाएं बनी हुई है !

'**श्री अमरापुर स्थान**' की गतिविधियां रोज सुबह सूर्योदय के साथ ही शुरू हो जाती है। प्रात:काल की पावन वेला में श्रद्धालुगण के सत्संग हाल में प्रवेश करते ही इष्टदेव भगवान लक्ष्मीनारायण को नमन करते है। उसके बाद सद्गुरु टेऊँराम जी और स्वामी सर्वानन्द जी प्रतिमाओं को प्रणाम करते है। बाद में मन्दिर की भीतरी

परिक्रमा करते हुये प्रेम प्रकाश मण्डल के उपदेशों को सच्चे मन से नमन करते है और गर्भ ग्रह में सद्गुरूओं की समाधि के दर्शन कर खुद को धन्य मानते हुये अविभूत भाव से शामिल होकर ''**ढोढा-चटनी**'' का यहां प्रसाद ग्रहण करते है!

यहां श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रकाशित सत्साहित्य भी उपलब्ध है। श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का सबसे महत्वपूर्ण पर्व है चैत्र मेला! हर साल अप्रैल माह में लगने वाले इस मेले में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालु देश-विदेश से श्री अमरापुर स्थान के दर्शन, सत्संग का अमृत पान करते है !

इस चैत्र मेले के अतिरिक्त गुरू पूर्णिमा, आचार्य श्री का जन्मोत्सव, जन्माष्टमी, महाशिवरात्रि, कातिर्कोत्सव, बसन्त पंचमी आदि पर्व भी बड़ी श्रद्धा भावना के साथ मनाये जाते है !

इस पावन स्थल पर ''**शनिवार**'' दिवस का महत्व भी अपना ही है। इसी दिन आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज का अवतरण हुआ था। आज भी शनिवार के दिन प्रातः से रात्रि तक दर्शनार्थियों का तांता लगा रहता है। इस दिन उनकी ''**समाधि स्थल**'' को बड़े ही मनमोहन पुष्पों से श्रृंगारित किया जाता है। इसी प्रकार ''**रविवार**'' के दिन प्रातःकाल सत्संग सभा में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की प्रवचन कैसेट, सत्संग-आरती आदि का कार्यक्रम होता है! जो भी श्रद्धालुगण सच्चे मन से यहां प्रार्थना करता है पूज्य गुरूवर उनकी सर्व मनोकामना पूर्ण करते है!

श्री अमरापुर स्थान के मुख्य द्वार के बाहर संचालित ''**श्री अमरापुर जल मन्दिर**'' में प्रतिदिन हजारों राहगीर व श्रद्धालुगण प्रसाद ग्रहण करने के उपरान्त अमृत जल पीकर अपना जीवन सफल बनाते है!

प्रतिदिन हजारों श्रद्धालुगण इस पावन स्थल का दर्शन कर अपनी आस्था का अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित कर अपने जीवन को धन्य धन्य बनाते है!

सन्त महापुरूषों की पावन भूमि श्री अमरापुर स्थान को हम सभी भक्तों का शतः शतः नमन्! कोटि-कोटि वन्दन !

ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान का पावन पर्व
चैत्र मेला

मेलों और त्यौहारों का जीवन में वही स्थान होता है जो मरुस्थलों में मरुउद्यानों का! ये मेले और त्यौहार, ये उत्सव और पर्व जीवन की नीरसता और निर्जीवता को दूर कर उसमें आनन्द और उल्लास, उत्साह और स्फूर्ति भरते है और उसमें नवीनता और ताजगी के रंग बिखेर कर उसे सरस और इन्द्रधनुषी रखते है और उन्हें जीवन्त और जाग्रत रखने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं!

मेले का शाब्दिक अर्थ है बहुत से लोगों का उद्‌देश्य सहित एक स्थान पर एकत्रित होना! पर याद रखिए कि वह भीड़ से बिल्कुल भिन्न, किसी लक्ष्य को लेकर लोगों का एक ही स्थान पर एकत्रित होना होता है। आध्यात्मिक और धार्मिक मेलों में सब लोगों का एक ही लक्ष्य, एक ही उद्‌देश्य, एक ही अभिलाषा, एक ही आकांक्षा होती है और वह है महापुरुषों के परम पावन जीवन से, विश्व की महान विभूतियों के सुन्दर चरित्र से प्रेरणा प्राप्त कर अपना आत्म कल्याण करना और अपने जीवन का नव निर्माण करना! **मेले का अर्थ ही है मेल-मिलाप, हृदय का हृदय से मिलन, आत्मा का आत्मा से मिलन और उसके उच्चतम शिखर पर आत्मा का परमात्मा से मिलन!**

इस मिलन का आधार स्तम्भ है प्रेम, परम पावन प्रेम निःस्वार्थ प्रेम शुभ एवं सुन्दर प्रेम! इसी उद्‌देश्य को लेकर **''प्रेम प्रकाश पंथ''** के संस्थापक परम पूज्यनीय **सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** ने **''चैत्र मेले''** की स्थापना की

थी! चैत्र मेले का शुभारम्भ चैत्र मास सिन्धी बारहवीं तिथि को **सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज जी** ने स्वयं अपने कर कमलों से किया था! अमरापुर (जिसे डिब॒ भी कहते है) की स्थापना चैत्र मेले के शुभारम्भ के पश्चात् आचार्य जी ने अपना पंथ बनाया जिसे ''**प्रेम प्रकाश पंथ**'' की संज्ञा दी!

सिंध में यह चैत्र मेला अमरापुर दरबार टंडोआदम में प्रतिवर्ष श्रद्धा, उत्साह, आनन्द और उल्लास के साथ मनाया जाता था! इस मेले रूपी ब्रह्मयज्ञ में भाग लेने के लिए सिंध प्रदेश के कोने-कोने से प्रेमी सत्संगी गुरुमुख, जिज्ञासु और मुमुक्षु, आया करते थे! न केवल सिंध परन्तु पंजाब, राजस्थान, गुजरात एवं अन्य प्रदेशों से भी कई यात्री आते थे! विदेशो से भी कई लोग टंडोआदाम पहुंचकर सद्गुरु महाराज जी के श्री चरणों में अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते थे! प्रेम प्रकाश पंथ के संत महात्माओं के अलावा अन्य स्थानों से संत महात्मा, गायक, भजनी, कवि-शायर, पंडित, विद्धान, दार्शनिक एवं विचारक इस मेले में सम्मिलित होते थे! सेवाधारी और स्वयंसेवक भी तन, मन, धन से मेले में सेवा कर अपना जीवन सफल बनाते थ!

सब तत्ववेता संत महात्मा एक तथ्य को समान रूप से स्वीकार करते है कि जीवन की दो ही परम आवश्यकताऐं है - **भजन और भोजन !** संत महात्माओं और इस संसारी जीवों के सोच विचार से बस एक ही अन्तर है और यह है - हम संसारी जीवन भोजन को प्राथमिकता देते है जबकि संत महात्मा भजन को ही प्रधानता देते है। संत महात्मा यह मानकर चलते है कि जिस परमात्मा ने बच्चे के जन्म से पहले ही माता के स्तनों में दूध भरकर उसके आहार की व्यवस्था की है, जो विश्वम्भर है, जो चींटी को कण और हाथी को मण आहार देता है, उस परमपिता परमात्मा का भजन कर, उसके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर, उसका गुणगान कर,

फिर बांट कर प्रसाद रूप से भोजन पाना चाहिए! परन्तु ज्ञानी और दूरदर्शी महात्मा भी भोजन की महत्ता को समझते है, **''अन्न भगवान''** की अनिवार्यता को जानते है। वे इस तथ्य से भलीभांति परिचित है कि **''भूखे भजन न होइ गोपाला''** स्वामी विवेकानन्द जी ने तो यहां तक कर डाला है कि एक भूखे इन्सान को रोटी न देकर उससे ज्ञान विज्ञान, ब्रह्म वेदान्त, आत्मा परमात्मा की बाते करता, उस दरिदनारायण का अपना करना ही है! सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज द्वारा शुभारम्भ किये गये चैत्र मेले के दिनों में भजन की विस्तृत और भोजन में इतना सुन्दर संतुलन और सामजस्य होता है कि शरीर और आत्मा दोनों तृप्त और संतुष्ट हो जाती है। ध्यान रहे इस पवित्र चैत्र मेले के अवसर पर कई परम उदारी सदृगृहस्थ आते है जो भण्डारे करवाते है! एक तो नाना प्रकार के षट्रस भोजन जिस पर उन्हें पक्तिबद्ध बैठकर ईश्वर प्रार्थना के पश्चात् प्रसाद रूप में पाना ऐसा आनन्द देता है, जो आनन्द कृत्रिम अशुचि, छीना झपटी वाले पांच सितारा होटलों से कदापि नहीं मिल सकता! उस प्रेम परम स्नेह सिकृत भोजन प्रसाद का स्वाद ही अद्वितीय है, अविश्वनीय है!

''चैत्र मेला'', जो कि भारत-विभाजन के पश्चात् प्रथम बार अमदाबाद में मनाया गया था, उसे हर्षोल्लास से मनाने में सेठ जगजीवन लाल और उसके सहयोगियों-गुजराती भाई बहिनों ने पूरा-पूरा और हार्दिक सहयोग दिया! कहना न होगा कि श्री जगजीवन लाल स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के परम उपासक भक्त थे!

मेला जो अब वर्तमान स्वरूप में मनाया जाता है, यह भी बड़ा भव्य लगता है! मेले के शुभारम्भ होने से काफी पहले ही सब प्रेमियों, सत्संगियों, संतों, महात्माओं को निमंत्रण-पत्र प्रेषित किये जाते है! चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में हर

वर्ष मनाया जाता है उसके शीर्ष स्थान पर सद्गुरु महाराज जी के ये वचनामृत उद्धत होते है!

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।

कहे टेऊँ जिसके किये, होवे भवन दुःख भंग।।

मेले में सम्मिलित होने के लिए निमंत्रण-पत्र कितना मधुर एवं मांगलिक होता हैः-

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान ।

संत समागम पायके, अपना करो कल्यान ।।

सत्संग की महिमा बताते हुए भगवान श्री कृष्णचन्द्र ने गीता में स्वयं लिखा हैः-

नाह्म वसामि वैकुंठे, योगीनां ह्रदय न च।

मद्भक्ता यत्र गायन्ति, यत्र तिष्ठामि नारद ।।

इस चैत्र मेले के परम पावन पर्व पर संत समागत का एक ऐसा दिव्य दृश्य उपस्थित होता है, ऐसी ज्ञान-गंगा प्रवाहित होती है जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है! ज्ञान-गंगा से भी बढ़कर प्रेम का ऐसा प्रवाह बहता है, स्नेह की ऐसी सरिता उमड़ पड़ती है, जिसमें ज्ञान ध्यान सब बह जाते है, स्नेह की ऐसी सरिता उमड़ पड़ती है, और दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। मेले के अवसर पर भाईचारे, सेवा, त्याग और सत्संग का अलौकिक दृश्य दृष्टिगोचर होता है!

चैत्र मेले का शुभारम्भ श्री गणेश पूजन, प्रेम प्रकाश पंथ के ध्वजा-आरोहण, हवन, सद्गुरु महाराज की आरती, वन्दन, पूजा-अर्चना और पवित्र ग्रन्थों जैसे श्रीमद्भगवत् गीता और प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों से होता है ! पांचों दिन नित्य प्रति सत्संग एवं अखण्ड भण्डारा चलता है! जिसमें सभी श्रद्धालु प्रसाद ग्रहण कर अपने

जीवन को सार्थक बनाते है!

लगभग ३ बजे एक '**भव्य शोभा यात्रा**' आरम्भ होती है! इस शोभायात्रा में सद्गुरु महाराज का आदमकद भव्य मूर्तियां रखी जाती है! मेले में नाना प्रकार की सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक झांकियां प्रस्तुत की जाती है। भिन्न-भिन्न भजन मण्डलियाँ गाती-बजाती नृत्य करती हुई - जिसमें "**छेज**" प्रधान होती है, अमरापुर दरबार से आरम्भ होकर, शहर के मुख्य मार्गों से गुजरती हुई वापस अमरापुर स्थान पर पहुँचती है! शोभायात्रा का हार्दिक स्वागत करने के लिए विभिन्न स्थानों पर "**स्वागत द्वार**" बनाए जाते है! कई प्रेमी और भक्त सद्गुरु महाराज की मूर्ति को एवं वर्तमान पीठाधीश्वर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज जी को और प्रेम प्रकाश मण्डल के सन्तों का नमन कर उनका आशीर्वाद लेते हैं और प्रसाद पाते हैं! शहर में जगह जगह प्रसाद वितरण किया जाता है और सुमधुर पेय पिलाये जाते है! भजन मण्डलियों में महिलाओं, माताओं, बहिनों में भी विशेष उत्साह और हर्षोल्लास दिखाई देता है! जगह जगह शोभा यात्रा पर पुष्प वर्षा की जाती है या गुलाब जल की बौछार की जाती है!

भजन मण्डलियों में एक विचित्र प्रकार की मौज मस्ती का आलम रहता है! बीच बीच में गुरु महाराज एवं संतों महात्माओं की जय-जयकार से आकाश गूंज उठता है! कई सेवाधारी ऐसे अलौकिक दृश्यों को कैमरा में उतार कर भविष्य में प्रेम प्रकाशी सत्संगियों को प्रेरणा प्रदान करते हैं!

मेले का यह समय सत्गुरु महाराज ईश्वर को समर्पित होने के कारण चिन्तारहित और चिन्तन से परिपूर्ण होता है! इस आध्यात्मिक चैत्र मेले के पश्चात् प्रेमी आत्म-चिन्तन कर अपने जीवन को सफल और सार्थक बनाने का सुन्दर प्रयास करते है!

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की प्रेमाभक्ति

प्रेम भगवान का साक्षात् स्वरूप ही है! जिसे विशुद्ध सच्चे प्रेम की प्राप्ति हो गयी, उसे भगवान मिल गये! वास्तव में देखा जाए तो प्रभु रस रूप है! श्रुतियों में भी परम पुरुष की रसरूपता का वर्णन मिलता है- **"रसो वै सः"** प्रेम का निजी रूप रस स्वरूप परमात्मा ही है. इसलिए जैसे परमात्मा सर्व व्यापक है वैसे ही प्रेम तत्त्व- आनन्द रस भी सर्वत्र व्याप्त है! विश्व के समस्त प्राणियों में प्रेम ही भगवान में प्रेम है, क्योंकि स्वयं परमात्मा ही सदैव आत्म स्वरूप से विराजमान है! जो व्यक्ति इस भगवद् प्रेम के रहस्य को भली भाँति समझ लेता है, उसका सभी प्राणियों के साथ अपनी आत्मा के समान प्रेम हो जाता है! ऐसे प्रेमी की प्रंशसा भगवान ने गीता के छठवें अध्याय में की है-

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः।।

जो योगी अपने ही समान सम्पूर्ण भूतों में सम देखता है और सुख अथवा दुःख में भी सम रहता है, वह योगी ही श्रेष्ठ माना गया है!

प्रेम ही आनन्द है और आनन्द ही प्रेम है! भगवान सगुण- साकार की उपासना करने वालों के लिये प्रेममय बन जाते हैं और निर्गुण-निराकार की उपासना करने वालों के लिये आनन्दमय बन जाते हैं! वे सच्चिदानन्दघन परमात्मा ही संत- महापुरुष और भक्तों के प्रेमानन्द हैं!

उन्हीं सन्त-महापुरुषों की परम्परागत कड़ी के दिव्य अलौकिक भगवद् भक्ति के प्रेमा स्वरूप प्रेम प्रकाश पंथ के प्रवर्तक- संस्थापक-बीजक **सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज** की भगवद् प्रेमाभक्ति अद्भुत विलक्षण थी! बाल्यावस्था से भगवद् भजन में वृत्ति परमानन्द से जुड़ गई! घर-परिवार का आध्यात्मिक वातावरण, माता कृष्णादेवी भी गोदी में बैठाकर राम नाम व ब्रह्मज्ञान की लोरी सुनाती! बालपन में ही सुसंस्कार का बीज उनके हृदय में रोपित हो गया. फिर तो माँ से कहते- माँ, मुझे तो **'लागी-लागी शब्द की चोट तन में'**

सुनाओ. बाल्यकाल में वैराग्यता प्रारम्भ हो गई! समय के साथ पाठशाला जाते ही एक '3ॐ' आदि अक्षर को साध लिया! वही आदि अक्षर '3ॐ' जीव को पढ़ना चाहिए, जिससे यह सारा संसार पैदा हुआ है, इस परिपूर्ण परमात्मा से ही यह जगत उत्पन्न हुआ है! चौरासी लाख योनियाँ और आश्चर्यजनक यह प्रकृति पैदा हुई! यह वही '3ॐ' आदि अक्षर है, जिसका चारों दिशाओं में चमत्कार दिखाई देता है! उसी '3ॐ' अक्षर से अनुभव ज्ञान की प्रखरता प्रारम्भ हो गई! निर्झर व एकांत स्थान में बैठकर प्रभु परमात्मा का चिन्तन मनन व साधना कर उस परमानन्द को रिझाते! वह भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम स्वरूप और अमृत स्वरूप भक्ति है! जिसको परम प्रेम रूपी भक्ति प्राप्त हो जाती है, वह स्तब्ध-शान्त हो जाता है और आत्माराम बन जाता है!

'यज्ज्ञात्वा मतो भवति स्तब्धो भवति आत्मारामो भवति'

तपस्वी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की भगवद् भक्ति प्रेमा स्वरूप है, तभी पंथ का नाम **'प्रेम प्रकाश पंथ'** रखा! कहते हैं कि भगवद् प्रेमी भक्त संत स्वयं तो तरते ही हैं, लोकों को भी तार देते हैं! **"स तरति स तरति स लोकोस्तारयति"** इतना ही नहीं भगवान के प्रेमी संत-महापुरुष या भक्त तीर्थों को सुतीर्थ, कर्मों को सुकर्म और शास्त्रों को सत्शास्त्र कर दते हैं! जैसे सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज द्वारा रचित आध्यात्मिक भक्ति ज्ञान, ईश्वर की प्रेमाभक्ति व गुरुभक्ति से ओत-प्रोत श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ! जो कि अनुभवी ज्ञान का अमूल्य खजाना, जिसमें भगवद् भक्ति के सरल व सुगम भजन, पद्य, छन्द, कवित्त, दोहे, सलोक माला सभी लोक कल्याणकारी, वैराग्यता, अभयदान, राम नाम गुणगान, कर्म उपासना, सगुण भक्ति, प्रभु की व्यापकता, जगत की नीरसता, गुरु महिमा आदि परमात्मा को प्राप्त करने के तथ्य हैं! इन सभी का सरल ज्ञान इस पवित्र ग्रंथ के मनन-पठन-पाठन से प्राप्त होता है, इससे अनुभव किया जा सकता है कि उस दुर्लभ योगी की कितनी कठिन साधना एवं पूर्ण भगवद् प्रेमा भक्ति होगी! जिससे गूढ़ से गूढ़ ज्ञान को बड़ी सहजता-सरलता और अनुभवता से रच दिया! ऐसे तपोमूर्ति श्री गुरुदेव को जानना-पहचानना और समझना बड़ा कठिन है!

योगी पुरुषों की प्रेमाभक्ति बड़ी विलक्षण एवं रहस्यमयी होती है! अनेक शास्त्रों में उन सत्पुरुषों के विलक्षण गुणों पर प्रकाश डाला गया है-

भगवद् प्रेम की प्राप्ति के लिए रोना, आंसू बहाना, एकांत में बैठकर भजन करना, भक्त का सर्वोपरि आनन्द है, जब भक्त की ऐसी भावना विरह वेदना होगी, तब भगवद् प्रेम का

मार्ग प्रशस्त होता है तब उसे खान-पान-आराम तो क्या संसार के किसी भी भौतिक पदार्थों से मोह-ममत्व-आसक्ति नहीं रह जाती, केवल भगवद् प्रेमाभक्ति में उसे महाआनन्द की प्राप्ति होती है! तभी महाराजश्री ने कहा -

लगन लगी जब राम से, क्या लोकनि से काम।

टेऊँ मोहि न भावहीं, खान पान आराम।।

ऐसे ही परम रहस्यमयी संत, भक्त और महापुरुषों की अपनी-अपनी विलक्षण भगवद् प्रेमाभक्ति और प्रेम साधना!

संत तुलसीदास आस्था के मूर्तरूप थे. सर्वव्यापी श्रीहरि का प्रकटीकरण प्रेम से होता है तभी लिख दिया- **'हरि व्यापक सर्वत्र समाना- प्रेम ते प्रगट होहिं में जाना' !** चैतन्य महाप्रभु का दिव्य प्रेम संकीर्तन के रूप में व्यापक था! जिनके हृदय से ऐसी सहज धारा बह निकली- जिसने सम्पूर्ण जगत को प्रेम प्लवित कर दिया! अक्रूर भगवान के वन्दन-प्रधान भक्त थे! प्रिय सखा के रूप में भगवान की प्रेमाभक्ति से उन्हें परम धाम प्राप्त हुआ!

भक्त श्री सुतीक्ष्ण जी जैसे सर्वगुण सम्पन्न भक्त के मन में अपने इष्ट भगवान श्रीराम के प्रति अनन्य श्रद्धा एवं भक्ति थी! उन्हें परमाराध्य नील कलेवर श्रीराम ही प्राणप्रिय थे! वैसे भी भगवान ने कहा है- **'मन्मन्त्रोपासका लोके मामेव शरणं गता'** संसार में जो लोग मेरे मन्त्र की उपासना करते हैं और मेरी ही शरण में रहते हैं, मैं उन्हें नित्य प्रति दर्शन देता हूँ! नामदेव जी की भगवद् भक्ति भी अद्भुत थी. उन्होंने लिखा-

'कहत नामदेव साँची मान- निरभै होई भजि लै भगवान'

नाम की भक्ति के प्रति कहा कि निर्भय होकर भगवान का भजन करना ही आनन्दमय है! भक्त जयदेव जी 'गीत गोविन्द' की कविता लिख रहे थे परन्तु वह पूरी ही नहीं हो पा रही थी, तब भगवान ने **'देहि में पद पल्लवमुदारम्'** लिखकर कविता पूरी कर दी! ऐसे ही एक संत ने कहा है कि एक परमेश्वर के सिवाय कोई मेरा नहीं है, वे ही मेरे सर्वस्य हैं अर्थात् श्रद्धा से युक्त अनन्य प्रेम करना और भगवान से भिन्न किसी भी वस्तु में किंचितमात्र भी आसक्ति न रखना यह अनन्य प्रेम है! संत, भक्त, महापुरुषों के समान ही सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की भगवद् के प्रति प्रेमाभक्ति भी उनके साधनाकाल एवं उनकी अमृतवाणी, सद्ग्रंथों में छलकती है! जगह-जगह देशारटन करते समय ओजस्वी वाणी से सत् उपदेश देकर जीवों में प्रेमाभक्ति की अलख जगाई! महाराजश्री ने लिखा-

कहे टेऊँ हरि नाम जप, भूलो ना क्षण एक।
भोगत-भोगत विषय, बीते जन्म अनेक।।

अनेक जन्म-जन्मांतर के पश्चात् मिला मानुष चोला, उसे व्यर्थ में न गंवाकर श्वांस-श्वांस से परमात्मा का चिन्तन करना चाहिए! विषय भोगों की लालसा समाप्त नहीं होती! न जाने कितने जन्म विषय भोग पदार्थों में व्यतीत कर दिये! एक-एक श्वांसका मूल्य पहचान कर जीव को नाम स्मरण करना चाहिए! और प्रभु परमात्मा को कभी भी भूलना नहीं चाहिए! क्षण-क्षण परमात्मा का चिन्तन करना भगवद् भक्ति है! प्रेम भाव को सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इस प्रकार प्रकट किया है-

प्रेम भाव से होत वश, भक्तवत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान।।
प्रेम बिना पहुँचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

संत महानुभावों का कथन है कि भगवान में और प्रेम में कोई भी तात्त्विक अन्तर नहीं! ईश्वर प्रेममय है! ईश्वर ही प्रेम है तथा प्रेम ही ईश्वर है! यह जीवात्मा उसी ईश्वर का अंश है **"प्रेम हरी कौ रूप है, त्यौं हरि प्रेम स्वरूप"** इसी प्रकार सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की भक्ति भी प्रेमास्वरूप है! अर्थात् प्रेमाभक्ति बिना परमात्मा को प्राप्त नहीं किया जा सकता! प्रेम ही प्रधान है! परमात्मा प्रेमाधीन है! प्रेम स्वरूप अपनी पराकाष्ठा है! परमात्मा को प्रेम और केवल प्रेम ही प्रिय है! ऐसे प्रेमस्वरूप हरि और उनके प्रेमी भक्तों, संतों के पादारविन्दो में कोटिशः नमन् वन्दन!

युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनमोल कृति

आध्यात्मिक श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ

सद्‌गुरु टेऊँराम ने, अद्‌भुत रचा इतिहास।
ग्रन्थ बनाया प्रेम का, हृदय भया हुलास।।

यह भारतभूमि-वसुन्धरा, ऋतम्भरा एवं विशम्भरा है जहाँ धन से अधिक धर्म को, भोग से अधिक योग को तथा साधना, आराधना और उपासना के क्षेत्र में भगवत् प्रेम को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है! यह भारतभूमि वह ज्ञानभूमि है जहाँ संत-महात्मा, महायोगी, परम पुरुष, मनीषियों ने अपने भगवत् प्रेम से सम्पूर्ण संसार का मार्गदर्शन- पथ प्रदर्शन एवं दिव्य-निर्देशन किया है! साथ ही यह धर्मभूमि और कर्मभूमि है! यहाँ भगवद् प्रेममय धर्म तथा भगवद् प्रेममय कर्म की रक्षा के लिये स्वयं परब्रह्म परमात्मा विभिन्न रूप धारण कर इस भगवत् प्रेम के पथ को प्रशस्त करने के लिये समय-समय पर किसी न किसी रूप में अवतरित हुए हैं!

शास्त्रों में सुख-शान्ति, गति-प्रगति और उन्नति आदि सबके स्फुरण और जागरण का मूल कारण भगवद् प्रेम ही माना गया है! यही निर्मल, विमल, धवल और उज्जवल भगवद् प्रेम सभी को भक्ति, मुक्ति, शक्ति तथा शान्ति सहित अक्षय आनन्द की प्राप्ति करने की राह दिखाता है! यह सत्य प्रेम ही जीवों को अनाचार, अत्याचार, पापाचार और दुराचार से दूर हटाकर सदाचार, सद् विचार, समता तथा मानवता का पाठ पढ़ाता है! ऐसा दिव्य-अलोकिक प्रेम ही हमें कर्मठता, सहनशीलता, गुणवत्ता, शुभ व सद् कार्य कुशलता का मंत्र प्रदान करता है! यह पावन पवित्र प्रेम ही हमें राष्ट्र; देश, धर्म, जाति, रहन- सहन, सयंम-साधना, भाषा-भाव, सत्यता-संस्कृति की सुन्दर शिक्षा व प्रेरणा देता है!

भगवद् प्रेम ही भोगी को योगी, स्वार्थी को परमार्थी, कृपण को उदार और नीरस को सरस बनाकर मानव जीवन के चरम लक्ष्य का भी बोध बड़ी सरलता, सहजता और सुगमता से करा देता है! भगवद् प्रेमी का जीवन निर्मल गंगाजल वत पवित्र व शुद्ध होता है! उसके रोम-रोम में प्रेमारस समाया होता है उस दिव्य प्रेम रस से नई शिक्षा, नई दीक्षा, नया उपदेश, नया आदेश, नया सन्देश, नई स्फुरणा, नई प्रेरणा तथा नई चेतना जाग्रत होती है जो समय-समय पर हम जीवों को मार्गदर्शन कराती है! धर्म अर्थ काम मोक्ष रूपी चतुष्टय की उपलब्धि व सिद्धि भी पराम पुरुषार्थ भगवत् प्रेम रस ही है! जिससे जीवन में एक नई स्फूर्ति का उदय होता है!

भगवद् प्रेमाभक्ति प्राप्त करने के मुख्य साधनों में देवर्षि नारद जी ने संत-महापुरुषों का संग अथवा कृपादृष्टि को ही बताया है! भगवद् प्रेमी भक्त स्वयं तो तरता ही है किन्तु लोगों को भी तार देता है इतना ही नहीं, भगवद् प्रेमी संत तीर्थों को सुतीर्थ, कर्मों को सुकर्म और शास्त्रों को सत्शास्त्र में परिवर्तित कर देता है! इसी प्रकार प्रेम तत्त्व की अनन्त गहराइयों में जाकर **युगपुरुष आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** ने अपने जीवन का सत्य अनुभव किया! एकांत में जाकर वृत्ति एकाकार और ब्रह्म चिन्तन में स्थित होकर अनुभवी वाणी का संचार किया! उसी पवित्र वाणी को दूसरी पातशाही सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज व संतों के द्वारा संजोया '**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**' रूपी '**अमृत रस**' लोक कल्याण के लिए इस जगत में उपस्थित हुआ! आज नित्य नियम सर्वत्र स्थानों पर "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" का पाठ किया जाता है! जो कोई भी इस ग्रन्थ का एक बार भी श्रद्धा भाव से पाठ करता है, वह परम पद का अधिकारी बन जाता है! इस ग्रन्थ की महिमा भी बड़ी अद्भुत और अनन्त है!

एक समय जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज (बद्रिकाश्रम वालों) ने जब ग्रन्थ का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया तो सहसे ही उनके श्रीमुख से निकला- यह ग्रन्थ कोई साधारण मानव द्वारा नहीं लिखा गया

है ! यह जरूर किसी अनुभवी, ब्रह्मज्ञानी, योगी महापुरुष के द्वारा ही रचा गया है !

ग्रन्थ में कितने न गूढ़ ज्ञान से परिपूर्ण ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान जैसे पद्य, छन्द, भजन, दोहे लिखे गये हैं! हीरे की परख जौहरी ही कर सकता है अतः जो अनुभवी, गुणवान वेदज्ञ महापुरुष होंगे वही इस ग्रन्थ की महत्त्वत्ता को समझ सकते हैं! आज अनेक भजनीक, कथावाचक, संतगण, एवं कवि-विद्वान सत्संग प्रवचनों के माध्यम से महाराजश्री द्वारा रचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की वाणी का वख्यान करते हैं! जिस प्रकार गुरुनानक, कबीरदास, सूरदास, रसखान, रैदास, दादूदयाल, तुलसीदास जैसे संत- कवियों की वाणी लोक जगत में विख्यात है उसी प्रकार महाराज श्री द्वारा रचित श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की वाणी भी पूरे विश्व भर में व्याप्त है! सिंधी समाज के अतिरिक्त सभी जाति, धर्म, पंथ के लोग श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की वाणी को बड़े ही श्रद्धा भक्ति भाव के साथ श्रवण और मनन करते हैं! **जयपुर के एक मुस्लिम लेखक स्वर्गीय चिराग जयपुरी ने तो इतना कहा कि मैं स्वयं प्रतिदिन सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज द्वारा रचित 'ब्रह्म दर्शनी' का पाठ करता हूँ !** जो कि श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ का ही अंश है! महाराजश्री की दोहावली को भी धार्मिक, आध्यात्मिक, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जा रहा है! महाराजश्री की ग्रन्थ वाणी में अनेक गूढ़ ज्ञान की बातें दर्शायी गई हैं! जिसे हम समझने का प्रयास करें-

अगम देश में आतम ज्ञानी-पाँव बिना चल जाते हैं।
नैन बिना ही रूप निहारत- कर बिना कर्म कमाते हैं।
कान बिना आवाज सुनत है- बिन जिव्हा गुन गाते हैं
नाक बिना सुगंधी को सूंघत- कहे टेऊँ सुख पाते हैं।।

सिखों का श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, कबीरदास का बीजक ग्रन्थ, स्वामी दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश, तुलसीदास व वाल्मीकि जी का रामायण ग्रन्थ, उसी प्रकार बीसवीं शताब्दी के सिद्ध योगी **युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** द्वारा रचित श्री प्रेम

प्रकाश ग्रन्थ की भी पूरे विश्व में अपनी एक विशिष्ठ पहचान है! उन्होंने अपने साधना काल में बहुत भजन-तप किया! उनकी वाणी में साक्षात् माँ सरस्वती देवी विराजमान थी! कण्ठ में ओज और वैराग्यता की छवि छलकती थी! मुख मण्डल में सदैव तेजोमय आभा प्रकाशित होती थी! माँ सरस्वती देवी की अनन्त कृपा से उनके हृदय में कविता रूपी ज्ञान गंगा प्रवाहित हुई जिसने न सिर्फ उस समय के लोगों पर वाणी की वरखा की किन्तु आज भी उनकी अनुभव रचित ज्ञान वाणी संतप्त हृदय में शीतलता प्रदान कर रही है और आने वाले युग में भी उन्हें अद्वितीय आध्यात्मिक आनन्द का रसास्वादन करायेगी! महापुरुषों की वाणी तो सदैव अजर और अमर होती है! उनके श्रवण करने मात्र से अमर तत्त्व की प्राप्ति हो जाती है!

जिस प्रकार अनेक संत-कवियों ने अपनी वाणी में भिन्न-भिन्न राग-रागनियों पर आधारित काव्यों की रचनाएँ की हैं उसी प्रकार **''युगदृष्टा आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज''** ने भी अपनी काव्यगत रचनाओं में राग आसा, राग रामकली, राग मालकोस, राग सारंग, राग भैरव इत्यादि का प्रयोग किया है! इसी के साथ-साथ अन्य कवि-संतों की भाँति दोहे, सवैये, छन्द, सलोक, कवित्त, कुण्डलियाँ, भजन, धनाश्री छन्द, कोटड़ा छन्द, बारह मास छन्द आदि पद्य एवं काव्यों की रचनाएँ की हैं! इससे यह भी प्रमाणित होता है कि पूज्य गुरुदेव जी को भारतीय संगीत विद्या का भी प्रचुर ज्ञान था! ग्रन्थ पढ़ने से लगता है कि स्वामी जी को भारतीय छन्द शास्त्र की भी अच्छी जानकारी थी! ग्रन्थ में अनेक जगह उपमालंकार व रूपक अलंकार का भी प्रयोग किया गया है! **श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ में सिंधी एवं हिन्दी भाषा में काव्य की रचना की गई है !** स्वामी जी ने ग्रन्थ में वर्ण मैत्री एवं वर्ण संगति का अच्छा समावेश किया है! कहीं पर उपमा अलंकार, छेकानुप्रास, रूपक एवं उदाहरण अलंकार का भी ग्रन्थ में प्रयोग किया गया है! ग्रन्थ साहिब में कहीं-कहीं पर **'हंसा मधुरी बोली बोलत, कौवे कड़ुवा गाते हैं'** अर्थात् नश्वर पदार्थ के प्रतीक हैं!

श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ (आध्यात्मिक महाग्रन्थ) युगपुरुष, महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अमूल्य कृति है! जिसके पठन-पाठन व श्रवण करने से आध्यात्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है! साथ ही आत्मिक उन्नति में समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करती है! सद्गुरु महाराज जी ने इस ग्रन्थ में ईश्वर उपासना, भक्त चरित्त राम-नाम महिमा, आत्मज्ञान, वेदांत, गुरुभक्ति, अन्तःसाधना, मौन की महिमा, संत महिमा, उपवास की महत्ता, शाकाहार के लाभ, कर्म-भक्ति उपासना, सत्संग महिमा, संगति आदि विषयों पर प्रभावशील सुन्दर-सुन्दर पद्य दोहे छन्द रचे हैं!

प्रेमावतार पूज्य गुरुदेव भगवान ने ग्रन्थ में ज्ञान-कर्म-भक्ति के साथ-साथ प्रभु प्राप्ति के लिये प्रेम की प्रधानता को प्रतिपादित किया है! प्रभु तो प्रेम के वश में होते हैं, जहाँ प्रेम है वहाँ परमात्मा है!

धन विद्या गुण रूप बल, भावत ना भगवान।
टेऊँ हरि को भाव हीं, प्रेम एक प्रधान।।
कर्मा कुब्जा भीलनी, हाथी अरु अनुमान।
टेऊँ केवल प्रेम कर, पाया हरि भगवान।।
प्रेम भाव से होत वश, भक्तवत्सल भगवान।
कह टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान।।

अर्थात् प्रेम परमात्मा का स्वरूप है! भगवान प्रेम के वशीभूत हैं तथा प्रेम का, अनुराग का, अनुरक्ति का मार्ग सहज और सुलभ है अतः प्रेम से ही प्रभु परमात्मा को रिझाना चाहिए!

श्री गुरुदेव जी का सद्ग्रन्थ भाषा भावों के अनुरूप है! भाषा में सरसता, रस एवं माधुर्य है! परम पुरुष श्री गुरुदेव भगवान द्वारा रचित **'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ'** के अध्ययन, मनन एवं श्रवण करने मात्र से प्रतीत होता है कि स्वामी जी सिन्ध प्रदेश में रहते हुए हमारी भारतीय हिन्दी भाषा से कितने न प्रभावित थे! जिन्होंने इतने सुन्दर

अनुभवी ज्ञान का ख़जाना काव्य ग्रन्थ की रचना की! ऐसे दुर्लभ अलोकिक कार्य को साधारण जन तो नहीं कर सकता, ये तो कोई साक्षात् ईश्वरीय शक्ति के रूप में योगी-महापुरुष द्वारा ही सम्भव हो सकता है! यह हृदय निकली अनुभव वाणी है ! जो कि बड़ी सरल एवं ज्ञानवर्धक है! जिसका श्रवण पठन सभी को प्रतिदिन अवश्य करना चाहिए !

बीसवीं शती के सिंधी-हिंदी संत कवियों में महाराजश्री का भी श्रेष्ठ स्थान है! उनके द्वारा रचित अमूल्य कृति 'श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ' सदैव अजर अमर थी, है और हमेशा हमेशा रहेगी!

आप अमर, वाणी अमर, अमर आपका नाम।
तव शरणागत भी अमर, सद्गुरु टेऊँराम।।

श्री प्रेम प्रकाश पंथ व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के बीजक, पुरोधा, युगपुरुष, युगदृष्टा, प्रेरणापुंज, मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज को कोटि-कोटि वन्दन!

!!इति!!

बाबा टेऊँराम का पावन जन्म दिवस शनिवार !

शनिवार की महिमा न्यारी, जग में आप पधारे।
तेरी तपस्या के बल से हुए, शनि के वारे न्यारे।।
जो भी शनिवार को आवे, गुरु चरणों में शीश झुकावे।
उसकी मंशा पूरी, करते बाबा टेऊँराम।।

शनि ग्रह का नाम सुनते ही भयभीत हो जाते हैं हम सब! शनि को अशुभ व दुःखदर्द देने वाला ग्रह मानते हैं! इसके प्रभाव से दुःख की घड़ी शनैः शनैः बीतती है (शनैचर अर्थात् धीरे-धीरे चलने वाला) मन विचलित हो उठता है! गृह-क्लेश, दुःखदर्द, धन- पदार्थों आदि की दशा भी ठीक नहीं रहती! इस ग्रह की छाया भी किसी को न लगे, ऐसी हम सब कामना करते हैं! वैसे भी कहा जाता है ग्रह किसी को दुःख नहीं देते है, हमारे कर्म ही हमें दुःख देते है इसलिए हमेशा शुभ व अच्छे कर्म करें! ऐसे ग्रहगोचर की दशा दूर करने के लिये **भगवान योगेश्वर ने महायोगी सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज** के रूप में शनिवार के दिन इस पवित्र धरा पर अवतार लिया! जिससे शनिग्रह का भय किसी को न लगे! जो कोई भक्त शनिवार के दिन सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के दरबार का दर्शन सच्चे मन से करता है तो बाबा उसके सब दुःखदर्द दूर कर देते हैं! वह सदैव प्रसन्नचित्त होकर परम सुख को प्राप्त करता है! मन में सच्चा प्रेम-भाव रखकर हर शनिवार को सद्गुरु टेऊँराम की दरबार पर दीप जलाना,

ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद का भोग लगाना, सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप करना, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा व जन्म साखी का पाठ करना व बाबा के दिव्य स्वरूप का पावन दर्शन! ये सभी शुभ कार्य करने से मनवांछित फल की प्राप्ति होती है! सच्चे मन से जो जैसी भावना लेकर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दरबार पर जाता है बाबा उसकी हर मनोकामना पूरी कर देते हैं!

अची छन्छर डींहु सीस झुकाए, सभु मन जूं मुरादूं पाए।

तहिंजा कारज थियनि, गुरु सभु कुछ डियनि वरे वारो।

अचो प्रेमी हलो, कंदो सतगुरु भली डिब वारो।

आयो आयो आ छन्छर डिहाड़ो।।........

मनोवांछित फल प्राप्ति हेतु आज शनिवार के पवित्र दिन हजारों श्रद्धालु भक्त सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के मुख्य दरबार ''**श्री अमरापुर स्थान, जयपुर**'' सहित देश विदेश के विभिन्न शहरों कस्बों में स्थित सैकड़ों सद्गुरु टेऊँराम दरबार प्रेम प्रकाश आश्रमों पर हाजरी जरूर लगाते हैं! भोरवेला से रात्रिपर्यन्त श्रद्धालु भक्त उमड़ पड़ते हैं! सभी दरबारों में एक आध्यात्मिक भक्तिमय मेले जैसा माहौल! अद्भुत नजारे! कोई धूप-दीप, अगरबत्ती जला रहा है तो कोई समाधि स्थल मंदिर में नामजप कर रहा है, तो कोई भक्त सत्नाम साक्षी मंत्रमाला का पवित्र जाप तो कोई बाबा का चालीसा पाठ करके बाबा को सश्रद्धा मनाने का मंगल प्रयास कर रहा है! सद्गुरु टेऊँराम बाबा की दरबार में, बाबा की पवित्र महिमा का गुणगान भजनों के माध्यम से चल ही रहा है! चहुँ ओर भक्तिमय वातावरण! भक्ति सरोवर में डूबे भक्तजन भूल जाते हैं अपनी सुध-बुध! सभी का मन “सद्गुरु टेऊँराम आराधना” में दिखायी पड़ता है!

ऐसे ग्रहगोचर विघ्नहर्ता दुःखदर्द को दूर करने वाले हैं अवतार कोटि के महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज! ऐसे महायोगियों के अवतार लेने पर दिवस, महीना, तिथि, वर्ष, स्थान, देश, गाँव एवं वह भूमि भी पवित्र व पावन हो जाती है साथ ही ये सभी पूजनीय बन जाते हैं! आज पूरे विश्व में सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्मोत्सव वर्ष के सभी '**शनिवार**' को मनाया जाता है! वार्षिक महोत्सव में "**सद्गुरु टेऊँराम जयंती**", मासिक जन्मदिवस में "**सद्गुरु टेऊँराम चौथ**" और साप्ताहिक जन्मदिवस में हर शनिवार सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का अवतरण दिवस पूर्ण श्रद्धा भक्ति-भाव के साथ आनन्दोल्लास से मनाया जाता है!

शनिवार की पवित्र वेला में समूचे विश्व में प्रातःकालीन व सायंकालीन सद्गुरु टेऊँराम भक्ति संध्या, गुरु प्रार्थनाष्टक पाठ, सद्गुरु टेऊँराम महिमा गुणगान, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा पाठ, सत्नाम साक्षी महामंत्र माला का जाप, सद्गुरु टेऊँराम जन्मसाखी का पाठ, आरती एवं बाबा के मंदिर की मनमोहक सजावट कर पुष्पों से शृंगारित किया जाता है! साथ ही महाप्रसाद ढ़ोढा चटणी का भोग लगाकर "**सद्गुरु टेऊँराम अवतरण दिवस शनिवार**" को बड़े श्रद्धा प्रेम व उत्साह के साथ मनाया जाता है!

थलुः डींहुं छन्छर आयो आ,
जन्म स्वामी टेऊँराम जो, मिली शिष्यनि मल्हायो आ ।।

1. थियो भागु भलो सभजो, जेके डींहु मल्हानि था ।
आहे वारो वरियो तिन जो ।।

2. मिली महिमा ग॒ाइनि था, कृपा स्वामी टेऊँराम जी।

पहिंजो घरड़ो वसाइनि था।।

3. भला छन्छर सदोरो आ, करे आश थिए पूरी।

झुलियो घर में हिन्दोरो आ।।

4. चवे 'जीवनमुक्त' जाई, खाली कोन वियो दर तां।

मिली सभखे आ वाधाई।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का जन्म शनिवार के दिन हुआ! तभी शनिवार को वरदान प्राप्त हुआ! जो भी जिज्ञासु भक्त शनिवार के दिन पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान अथवा अपने शहर में स्थित सद्गुरु स्वामी टेऊँराम दरबार (प्रेम प्रकाश आश्रम) का दर्शन करेगा! वह अमरत्व प्राप्त करके **'शनि'** के प्रकोप से सदा बचा रहेगा एवं उस पर सदैव सद्गुरु टेऊँराम भगवान का आशीर्वाद बना रहेगा! श्री गुरुदेव भगवान के पावन श्री चरणों में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का

महाप्रसाद – ढ़ोढा–चटणी

अमृतमय होता है, भगवान व संतों महापुरुषों का महाप्रसाद! उसका अद्वितीय स्वाद! भाव से भरपूर, स्नेह से सिक्त और प्रेम से युक्त! जिनके सामने छप्पन प्रकार के व्यँजन भी फीके पड़ जाते हैं! भगवान् श्रीकृष्ण ने दुर्योधन के छप्पन व्यँजनों का त्याग करके विदुर के घर केले के छिलके व अलूणी भोजन प्रसादी ग्रहण की. कर्माबाई की खिचड़ी, भीलनी के बेर, सुदामा के तन्दुल! ऐसे ही **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का महाप्रसाद है ढ़ोढा चटनी !** अद्वितीय स्वाद से भरपूर, प्रेम से युक्त, स्नेह से सिक्त इस प्रसाद की महिमा न्यारी है, जो भी भक्त एक बार इस प्रसाद को ग्रहण करता है, उसे पुनः पुनः यह प्रसाद पाने की चाहत होती है, वह प्रसाद स्वयं खाकर घर- परिवारजनों के लिए भी आवश्यक रूप से ले जाता है! दूर-दूर से आने वाले भक्त भी बड़े चाव से "**ढ़ोढा चटणी**" प्रसाद खाकर अपने कस्बे नगर कॉलोनी को भी ले जाते हैं! प्रसाद की अद्भुत शक्ति सभी को मंत्रमुग्ध कर देती है! गुरुदेव का अमृतमय महाप्रसाद! आध्यात्मिक जगत में ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद अपनी अलग ही पहचान रखता है!

हमारे परम पावन हृदयस्थली, प्रेम प्रकाश पंथ का मुख्यालय "**श्री अमरापुर स्थान**" हो या देश विदेश का कोई भी प्रेम प्रकाश आश्रम हो, सब स्थानों पर "**ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद**" ही मुख्य प्रसाद के रूप में वितरित होता है! सभी आश्रमों पर प्रतिदिन या सद्गुरु टेऊँराम चौथ अथवा शनिवार के पावन दिवस पर

ढ़ोढा चटनी का प्रसाद आवश्यक रूप से वितरित होता है! पुदीने, धनियाँ, प्याज, हरी मिर्च, इमली आदि का हरा भरा मिश्रण मन को इस प्रकार भाता है कि पुनः पुनः प्रसाद लेकर खाने को मन करता है! इस प्रसाद के सामने छप्पन प्रकार के व्यँजन भी फीके लगते हैं!

विशेष त्यौहार पर्व पर सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का महाप्रसाद ढ़ोढा चटनी भोग लगाकर वितरित होता है! स्वामी टेऊँराम आश्रमों में अनेक जिज्ञासु घर से बनाकर ढ़ोढा चटणी महाप्रसाद लाकर भोग लगाते हैं! जिन शहरों में आश्रम नहीं हैं वहाँ पर शनिवार को कई प्रेमी किसी घर में एकत्रित होकर सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज गुणगान करते हुए महाप्रसादी ढ़ोढा चटणी का भोग लगाकर वितरित करते हैं! और जिस नगर कस्बे में प्रेमी दूर दूर रहते हैं तो वे अपने घर में ही शनिवार व चौथ को सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज का महाप्रसाद ढ़ोढा चटनी का भोग बाबा को अर्पित कर स्वयं भी खाते हैं और आस-पास पड़ौसियों में भी वितरित करते हैं! भारतवर्ष ही नहीं विदेशों में भी सद्‌गुरु टेऊँराम चौथ या शनिवार के दिवस पर साँध्यकालीन सद्‌गुरु टेऊँराम भक्ति संध्या आयोजित कर मुख्य रूप से ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद वितरित किया जाता है! प्रत्येक भक्त का कर्तव्य भी है, शनिवार व चौथ की साँझ वेला में अपने शहर की कॉलोनी में भक्ति सँध्या, आरती, सद्‌गुरु टेऊँराम चालीसा पाठ, जन्म साखी पाठ, सत्‌नाम साक्षी महामंत्र जाप एवं ढ़ोढा चटनी का प्रसाद वितरित कर "**सद्‌गुरु टेऊँराम अवतरण दिवस**" को भक्तिभाव के साथ मनाना चाहिए! यह भी एक गुरु भक्ति है!

ढ़ोढो चटणी छन्छर डीं‌ह ठाहे, अची सांईंअ खे भोग लगाए,

सदा सुख सो लहे, तहिंजो भरियो रहे-तहं भण्डारो।

प्रत्येक प्रेमप्रकाशी को हर मंगल कार्य में (जन्म दिवस, विवाहोत्सव, पाठ साहब भोग व गृहस्थ धर्म के समस्त शुभ मंगल कार्यों में) भी मुख्य रूप से सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अनुपम प्रसाद ढ़ोढा चटनी बनाकर वितरित करना चाहिए! जितना हो सके हर शनिवार व सांई टेऊँराम चौथ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम दरबार पर अन्य प्रसाद के सिवाय प्रमुख रूप से ढ़ोढा चटनी प्रसाद का भोग गुरुदेव को लगाना चाहिए, जिससे हमें श्रीगुरुदेव भगवान का आशीर्वाद मिलेगा! किसी के हाथ में ढ़ोढा चटनी प्रसाद है, तो उसके नगरवासी परिचित कहते हैं कि क्या स्वामी टेऊँराम दरबार से आ रहे हो, ये तो सभी ने अनुभव किया ही होगा! सभी भक्त सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रति भाव प्रकट कर प्रसाद ग्रहण करते हैं!

ऐसी महिमा न्यारी है-सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज के ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद की ! महापुरुषों के श्री चरणों में शत्-शत् नमन ! कोटि-कोटि वन्दन !

सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज का अमोघ महामंत्र

सत्नाम साक्षी

अनादि काल से चली आ रही सनातन संस्कृति के अनुसार गुरु शिष्य की परम्परा! जिससे शिष्य अपने आत्मोद्धार के लिए पूर्ण श्रद्धा भाव से गुरु की शरण जाकर गुरुमंत्र की दीक्षा प्राप्त करता है! गुरुमंत्र का चिन्तन कर प्रभु आराधना से अपने चित्त को परमात्म से जोड़ता है, साथ ही अपने जीवन को आध्यात्मिक पथ पर ले जाकर जीवन को कल्याण मार्ग की ओर बदलता है !

हर व्यक्ति अपने इच्छानुसार ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः भगवते वासुदेवाय, गायत्री मंत्र आदि सिद्ध मंत्र का जाप करके अपने जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करता है! परम **योगीश्वर मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** द्वारा दिया गया कल्याणकारी महामंत्र है **"सत्नाम साक्षी"**! जिसका जाप करने से मनुष्य इस संसार सागर को सहजता से ही पार कर जाता है! **'गुरु नाम की नाव चढ़ाय दिया'** इस नामरूपी नौका में बैठने वाले गुरुभक्त अवश्य ही इस भवसागर से पार हो जाते हैं!

इस महामंत्र का अर्थ भी बड़ा सरल है! गीता वेद पुराण के अनुसार **"नासतो विद्यते भावो न भावो विद्यते सतः"** जिसका कभी नाश नहीं होता, जो सदैव सत और अजर अमर है ! अर्थात् वही सत् है ! परमात्मा स्वरुप है !

जो सभी जीव चराचर शक्ति में विद्यमान है! अलौकिक है, अचेतन है, निर्गुण निराकार है, सत्‌चित आनन्द स्वरूप है वह साक्षी चेतन की ज्योति प्रकाशित है! **'सत्‌नाम साक्षी'** इस महामंत्र का प्रकाश भी सर्वत्र विद्यमान है! तीन पदों से व्यक्त **'सत'** परमात्मा का नाम सदैव सत है वह अजन्मा है सर्वत्र व्यापक है! **'नाम'** परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि में नामरूप सत्य है. जिनको विभिन्न नामों से जाना जाता है! अग्नि, जल, वायु, आकाश, पृथ्वी से सभी पँचमहाभूत उस प्रभु परमात्मा की ही सत्ता है! साक्षी सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, गृह, नक्षत्र में सभी **'साक्षी'** उस प्रभु की अखण्ड सत्ता का आभास करवाते हैं! **'साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुनि आकाश'** सभी परमात्मा की सत्ता का भान करवाते हैं!

सत्‌नाम साक्षी स्वयं ब्रह्मस्वरूप है-

सत्‌ तो सत है नाम निरोगी, साक्षी चिद आकार।
ब्रह्म स्वरूपी सत्‌नाम साक्षी, सब जग का आधार।।
सत्‌नाम साक्षी का मंत्र है, बन्धन काटन हार।
दया करे गुरु देवे जिसको, तिसका होय उद्धार।।

यह श्री गुरुदेव का बीजक महामंत्र है! यह महापुरुषों के भीतर से प्रकट होता है! जैसे नन्हें बीज से वृक्ष की उत्पत्ति हो जाती है वैसे गुरुमंत्र के निरंतर अभ्यास से अज्ञान का पर्दा दूर होकर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है! साथ ही जीव परम सत्ता को पहचान कर स्वयं सत स्वरूप बन जाता है! **युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** का अमोघ महामंत्र **'सत्‌नाम साक्षी'** न जाने कितनों को भवसागर से पार कर देता है! यह एक अद्भुत और विलक्षण मंत्र है! यह उपनिषद्‌ मंत्र है इसका बड़ा गहरा अर्थ हैं

यह गुढ ज्ञान से भरा हुआ ! भगवद् प्रेरणा से महापुरुषों के हृदय से प्रकुरित होता है अर्थात् वेद रुपमय महामंत्र है! इसका अभ्यास करने से जीव का अवश्य कल्याण हो जाता है! तभी महापुरुषों ने लिखा-

सत्नाम साक्षी मन्तरि डेई, सतगुर तारिया पापी केई।

जहिंजो दीन दयालु नाम आ।।

गुरु के द्वारा दिया गया मंत्र सगुण साकार व प्रणाम स्वरूप होता है! इसका निरन्तर जाप करना प्रत्येक शिष्य का परम कर्त्तव्य है! गुरुभाई अर्थात् शिष्य जब आपस में मिलें तो सत्नाम साक्षी कहकर ही एक दूसरे से मिलें! जिससे पता चलता है कि ये प्रेमप्रकाशी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का सच्चा भक्त है! हर प्रेमप्रकाशी भक्त का कर्त्तव्य है गुरु के नाम को उजागर करे! चिट्ठीयाँ-पत्र, फोटो-मूर्तियाँ, बहीखाते, शादी कार्ड, अभ्यास पुस्तिका एवं सभी मंगल कार्यों के निमंत्रण पत्र पर "**सत्नाम साक्षी**" महामंत्र का सर्वप्रथम लेखन करना भी गुरुभक्ति है! शास्त्रानुसार गुरुभक्ति ही सर्वोत्तम भक्ति है! गुरुमंत्र का अपमान या निरादर जीवन में कभी नहीं करना चाहिये! जीवों को धर्म-कर्म, मान-मर्यादा व परमात्मा के मार्ग पर प्रेरित करने के लिये गुरुमंत्र अमृत के समान है!

सत्नाम साखी मिठो आहे माखी,

जिज्ञासी नित जपियो प्रेम प्रकाशी।

गुरुदेव द्वारा प्रदत्त महामंत्र सत्नाम साक्षी को अपना आधार बिन्दु बना लो, फिर किसी भी प्रकार का दुःख-दर्द नहीं होगा! सोते-जागते, खाते-पीते, उठते-बैठते सब क्रिया कलापों से सत्नाम साक्षी मंत्र का ही स्मरण करें! गुरुमंत्र के प्रभाव को ध्यान में रखकर जीवन में हर व्यक्ति

प्रतिदिन 24 घंटे में 21,600 बार श्वास लेता है, श्वास के आधार पर दिन में व्यक्ति कितनी बार परमात्मा का चिन्तन करता है! विचार करना?

प्रत्येक साधक को श्वास-श्वास में सत्नाम साक्षी महामंत्र को धारण करना चाहिये और यह निरन्तर अभ्यास से संभव है! प्रतिदिन कम से कम ६ या ११ माला सुबह और रात्रिकालीन सोते समय अर्थात् पूरे दिन में महामंत्र का जाप श्रद्धापूर्वक कर लिया, तो समझो 21,600 श्वासों का फल इससे सिद्ध होता है!

सत्नाम साक्षी जो उच्चारे – तंहिंजा सत्गुरु थो दुःखड़ा टारे ।
जमें सो ना मरे, सहजे ही तरे – भव तारो ।।

हर शनिवार की शाम तो श्री अमरापुर स्थान, जयपुर के साथ- साथ विभिन्न शहरों में स्थित सद्गुरु टेऊँराम दरबारों में **'सत्नाम साक्षी'** महामंत्र की माला का सामूहिक जाप करने से परम पद की प्राप्ति होती है!

युगपुरुष के द्वारा दिया गये **'सत्नाम साक्षी' महामंत्र को अपने ऊपर गवाही देने वाला गवाह समझो ! यही तुम्हारा कल्याण करके मोक्ष प्रदान करेगा !**

गुरुभाई आपस में जब कभी भी जहाँ पर भी मिलें तो सत्नाम साक्षी कहकर ही एक-दूसरे से मिलें! जिससे पता चलता है कि ये प्रेम प्रकाशी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का भक्त है! ये प्रणाम स्वरूप महामंत्र है! श्री गुरुदेव युगदृष्टा महायोगी-कर्मयोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के ''श्री चरणों'' में शत्-शत् नमन् !

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

मासिक जन्म दिवस

सद्गुरु टेऊँराम चौथ

धर्मप्राण भारत देश के अनेकानेक पर्व-उत्सव, तीज-त्यौहार बड़े भक्ति श्रद्धा भाव के साथ मनाये जाते हैं! उनमें से कुछ वार्षिक पर्व यथा : दीपावली, होली, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, शिवरात्रि, मकर संक्रांति, सद्गुरु टेऊँराम जयंती और कुछ मासिक पर्व जैसे : चन्द्र दर्शन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति, सद्गुरु टेऊँराम चौथ एवं कुछ पाक्षिक पर्व यथा : एकादशी, गणेश चतुर्थी आदि अनेक तीज-त्यौहार आस्था एवं भक्तिभाव के साथ मनाये जाते हैं! उन्हीं मासिक पर्वों में है प्रेम प्रकाशियों का पर्व सद्गुरु टेऊँराम चौथ! जो कि चन्द्रदर्शन के पश्चात् चौथे दिन (सिन्धी चौथी तारीख) **''सद्गुरु टेऊँराम चौथ''** के नाम से प्रसिद्ध है! इन तिथियों के आधार पर भारत देश में रहने वालों के अलावा विदेशों में बसे भारतीय भी पर्व-उत्सव मनाते हैं. नवमी पर भगवान श्रीराम का, अष्टमी पर माता रानी व भगवान श्रीकृष्ण का, चतुर्थी पर गणेश भगवान का, पँचमी पर माता सरस्वती का दिवस मनाया जाता है! ऐसे ही सिन्धी चौथ तिथि **"सद्गुरु टेऊँराम चौथ"** महोत्सव पूरे विश्व में प्रेम प्रकाशियों द्वारा मनाया जाता है!

चौथ तिथि के पवित्र दिवस पर पूरी दुनिया के प्रेम प्रकाशी भक्तजन गली-गली, कौने-कौने में साँध्यकालीन सद्गुरु टेऊँराम भक्ति संध्या आयोजित कर सद्गुरु टेऊँराम चौथ बड़े श्रद्धा व भक्तिभाव के साथ मनाते हैं! इस पावन दिवस पर विभिन्न शहरों के प्रेम प्रकाश आश्रमों एवं आश्रम से काफी दूरी पर बसी कॉलोनियों में जहाँ के गुरुभक्त प्रेमी आश्रम पर न आ पाने के कारण कॉलोनी में ही एकत्रित होकर एक विशेष स्थान पर सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की मनमोहक

प्रतिमा विराजमान करते हैं! इसी के साथ चहुँ ओर विभिन्न पुष्पों से शृंगारित झाँकी, धूप, अगरबत्ती की महक, दीपों की सजावट युक्त आरती की थाली के साथ विविध प्रकार के वाद्ययंत्रों झाँझ, ढोल, मँजीरे, शँख आदि से भक्ति-सँध्या के अन्तर्गत बाबा की महिमा का गुणगान महिमा भजनों द्वारा, सत्संग, सद्गुरु टेऊँराम जन्मसाखी, सद्गुरु टेऊँराम चालीसा, सत्नाम साक्षी महामंत्र जाप, गुरु प्रार्थनाष्टक के सामूहिक गायन के साथ सद्गुरु टेऊँराम चौथ मनाई जाती है!

सद्गुरु टेऊँराम चौथ की पवित्र तिथि पर पूरे संसार भर के प्रेम प्रकाशियों के मन में अत्यंत खुशी व उल्लास छाया रहता है! प्रातः से ही भक्तजन एकजुट होकर उल्लासित मन से सद्गुरु टेऊँराम भक्ति सँध्या की तैयारी में जुट जाते हैं! प्रायः हर प्रेमी अपने घर से ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद बनाकर बाबा के भजन सँध्या में शामिल होने के लिये पहुँचते हैं! वहाँ बाबा को प्रसाद का भोग अर्पण कर प्रसन्नचित्त होकर फिर शुरू करते हैं भजन सँध्या, कोई तबला कोई बाजा तो कोई मँजीरा-झाँझ लिये मस्ती से झूमते गा रहा है तो कोई बाबा को रिझाने के लिये मस्त होकर सुध-बुध भूलकर भजनानन्द में नाचता है! सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की दीवानगी में दीवाने भक्तों को न अपने शरीर की सुध- बुध होती है और न कोई समय का भान! बस-भक्ति-भजनानंद की मौज में मस्त!

किसे राम प्यारा- किसे प्यारा श्याम,
हमें तो प्यारा लागे, बाबा टेऊँराम।
किसे एकादशी तिथि, लगे है प्यारी,
कोई सत्यनारायण का व्रतधारी।
हमें लगे चौथ ही, सुन्दर श्याम...

इसी के साथ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के समक्ष ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद जो कि पूर्व में ही भक्तों द्वारा रखा गया होता है, गाते हुए कहते हैं-

आओ भोग लगाओ– सांई टेऊँराम।

सांई टेऊँराम– बाबा टेऊँराम।

रुचि रुचि भोग लगाओ– सांई टेऊँराम।

प्रेम से भोग लगाओ, सांई टेऊँराम।

आओ भोग लगाओ...............

प्रार्थना भक्ति सरोवर में डूबे हजारों श्रद्धालु भक्ति भाव के साथ सभी गुरु बाबा के समक्ष श्रद्धा सुमन अर्पित कर बड़े उत्साह उमँग से प्रति माह सद्गुरु टेऊँराम चौथ मनाते हैं! अनेक आश्रमों पर रात्रिकालीन भजनानन्द से उल्लासित भक्तगण सामूहिक भोजन-प्रसादी का आयोजन कर **"सद्गुरु टेऊँराम चौथ महोत्सव"** श्रद्धा भक्तिभाव से मनाकर श्री गुरुदेव का मंगल आशीर्वाद प्राप्त करते हैं!

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)